COURSE NAME –M.Ed IIIrd SEMESTER
SUBJECT NAME = ELEMENTARY EDUCATION FOR DIFFERENTLY ABLED (SC-1)

Concept & issues of integration, inclusion & special education
(अवधारणा और एकीकरण, समावेश और विशेष शिक्षा के मुद्दे)

एकीकरण की अवधारणा (Concept of intergration)

एकीकृत शिक्षा में विकलांग बच्चे को सामान्य विद्यालय के अन्तर्गत विशेष कक्षा में पढ़ाया जाता है। विकलांग बच्चे अलग कक्षा में तो शिक्षा ग्रहण करते हैं परन्तु कक्षा के बाहर दूसरे कार्य सामान्य बच्चों के साथ करते हैं। एकीकृत शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है विकलांग बच्चों को अलग शिक्षा जोकि विशेष शिक्षा के रूप में होता था, को हटाकर उनको सामान्य विद्यालय में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देना है। वर्तमान समय में एकीकृत शिक्षा पुरानी बात हो गयी है तथा अब समावेशित शिक्षा की शुरुआत हो चुकी है, जिसको आप आगे के इकाई में विस्तारपूर्वक पढ़ेंगे।

जैसा कि आप जानते होंगे कि विकलांग बच्चों की शिक्षा की शुरुआत विशेष विद्यालय से हुई। विशेष विद्यालय विकलांग बच्चों के घर से दूर होते थे जहाँ ये बच्चे रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। समय के साथ-साथ इस बात की चर्चा होने लगी कि विकलांग बच्चे सर्वप्रथम बच्चे हैं, उसके बाद उनकी विकलांगता आती है। अतः उनको भी दूसरे सामान्य बच्चों जैसा घर के पास सामान्य विद्यालय में पढ़ने का अधिकार है। इसी सोच ने एकीकृत शिक्षा को जन्म दिया।

भारत में एकीकृत शिक्षा का प्रारम्भ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सन् 1974 में कल्याण मंत्रालय द्वारा चलाई गयी ''विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा'' (इन्टिग्रेटेड एजुकेशन फॉर डिसेबल्ड चिल्ड्रेन) जिसको संक्षेप में आइ.ई.डी.सी. योजना भी कहते हैं, से हुई। (शर्मा, 2004)।

आई.ई.डी.सी. योजना कल्याण मंत्रालय द्वारा लागू की गयी थी जबकि सामान्य विद्यालय शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत होते हैं अतः इस योजना को सही ढंग से लागू करने में परेशानी होती थी। जब 1981 में (इस वर्ष को संयुकत राष्ट्र संघ ने विकलांग व्यक्तियों के लिए अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित किया था) इस योजना का मूल्यांकन किया गया तो कुछ कमियों को देखते हुए इसे 1982-83 में शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कर दिया गया।

सन् 1992 में इस योजना में संशोधन किया गया जिसके तहत उस विद्यालय को जो विकलांग बच्चों के एकीकरण में सम्मिलित थे उनको 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता देने की बात कही गयी। इस कार्यक्रम को चलाने के लिए गैर-सरकारी संस्थाओं को भी वित्तीय सहायता दी जाने लगी। (शर्मा, 2005)

भारत सरकार के इन सब प्रयासों से ही एकीकृत शिक्षा विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए एक आर्थिक रूप से सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार की गयी। आई.ई.डी.सी. योजना की यह एक महत्वपूर्ण देन है कि विकलांग बच्चों को विशेष विद्यालय से निकालकर सामान्य विद्यालय में शिक्षा दी जाने लगी।

एकीकरण शिक्षा की प्रकृति (Nature of Integration Education)

एकीकृत शिक्षा की प्रकृति मुख्यतः मानव जाति के विकास पर, विद्यार्थी में समाज के अनुकूल तथा सामाजिक जीवन में भागीदारी की योग्यताओं का विकास करने पर फोकस करती हैं। ज्ञान की शिक्षा विद्यार्थी को बुद्धिमान बनाती है, तथा जीवन की शिक्षा विद्यार्थी में अच्छे व्यक्तित्व का विकास करती है। (मंग)। एकीकृत शिक्षा चार प्रकार के सीखने के सिद्धान्त पर फोकस करती है, जो हैं

1. जानने के लिए सीखना
2. करने के लिए सीखना
3. एक साथ रहने के लिए सीखना
4. पूरे शिक्षा के एकीकरण के लिए सीखना।

उपर्युक्त चार प्रकार के सीखने का मूल है कि विद्यार्थी के व्यक्तित्व, संज्ञानात्मक सिद्धान्त एवं आवश्यकताओं का सम्मान करना चाहिए। (मंग)।

एकीकरण शिक्षा के प्रारूप (Integration Education format)

एकीकृत शिक्षा का अर्थ एवं प्रकृति का अध्ययन करने के बाद अब हम इस बात की चर्चा करेंगे कि एकीकृत शिक्षा की प्रक्रिया क्या है अर्थात एकीकृत शिक्षा कैसे दी जाती है। एकीकृत षिक्षा के लिए प्रक्रिया को हम इसके विभिन्न प्रारूपों के माध्यम से समझ सकते हैं।

इस खण्ड में हम एकीकृत शिक्षा के विभिन्न प्रारूपों का अध्ययन करेंगे; जो हैं◌ः

1. संसाधन कक्ष प्रारूप (रिर्सोस रूप मॉडल)
2. परिभ्रामी अध्यापक प्रारूप (इटिनेंरेन्ट टीचर मॉडल)
3. संयुक्त प्रारूप (कम्बाइंड मॉडल)
4. गुच्छित अथवा समूह प्रारूप (कल्सटर मॉडल)

5.सहयोगी प्रारूप (को-ऑपरेटिव मॉडल

6. द्विशिक्षण प्रारूप (ड्यूल टीचिंग मॉडल

7. बहुकौशल शिक्षण प्रारूप (मल्टी-स्किल्ड टीचिंग मॉडल)

एकीकृत एवं समावेशित शिक्षा में अंतर
(Differencein integrated &inclusive education)

i. एकीकृत एवं समावेशित शिक्षा में प्रमुख अन्तर यह है कि एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सामान्य विद्यालय में शैक्षिक अवसर प्रदान किया जाता है, जबकि समावेशित शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सामान्य विद्यालय की सभी शैक्षिक गति- विधियों में सम्मिलित करते हुए शैक्षिक अवसर प्रदान किया जाता है।

ii. एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाला विद्यार्थी एक समस्या के रूप में होता है, जबकि समावेशित शिक्षा में शैक्षिक संस्था एक समस्या के रूप में होती है।

iii. एकीकृत शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वयं को विद्यालय की आवश्यकतानुसार अपेक्षित सुधार कर साम्जस्य स्थापित करे, जबकि समावेशित शिक्षा में विद्यालय का उत्तरदायित्व है कि वह विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी के अनुरुप विद्यालय के भवन, पाठ्यक्रम व अन्य सुविधाओं को उसे उपलब्ध कराने हेतु अपेक्षित सुधार करे।

iv. समावेशित शिक्षा एक लम्बी अवधि की प्रक्रिया है, जबकि एकीकृत शिक्षा एक न्यूनतम अवधि का उद्देश्य है। चूँकि एकीकृत शिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी को सामान्य विद्यालय में शिक्षा के अवसर प्रदान किये जाते हैं, अतः इसे न्यूनतम अवधि का उद्देश्य कहा जाता है, क्योंकि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सामान्य विद्यालय में भर्ती कराना कोई कठिन कार्य नहीं है। कठिन कार्य तथा लम्बी अवधि की प्रक्रिया यह है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सामान्य विद्यालय के सभी कार्यों में पूर्णरूप से भागीदारी हो रही है कि नहीं, इसलिए समावेशित शिक्षा को लम्बी अवधि की प्रक्रिया कहते हैं।

v. समावेशित शिक्षा सामाजिक प्रारुप पर आधारित है, जबकि एकीकृत शिक्षा व्यक्तिगत प्रारुप पर आधारित है।

एकीकरण के मुद्दे (Issues of integration)

एकीकरण में कुछ प्रमुख मुद्दे निम्नलिखित है -

i.विकलांगता का गरीबी के साथ सम्बंध

ii. रूढ़ीवादी मनोवृत्ति

iii. जन शिक्षा एवं प्रसार

iv. विद्द्यालयों के कर्मचारियों के प्रशिक्षण में कमी

v. अपर्याप्त संसाधन

उपर्युक्त मुद्दों के अतिरिक्त पांडा (2003) ने एकीकरण में कुछ और मुद्दों का उल्लेख किया है, जो निम्नलिखित है:

i. मनोवैज्ञानिक, मनोरंजनात्मक तथा व्यवसायिक कौशल विकसित करने के लिए सहायक व्यवस्था तथा सेवाओं को भी सामान्य विद्यालय में विकलांग बच्चों के लिए होना चाहिए।

ii. इन बच्चों के लिए अनुदेशात्मक प्रक्रिया अभी भी पुरानी/परम्परागत है, इसमें सुधार के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण देना चाहिए।

iii. इन बच्चों के प्रति अध्यापक एवं सामान्य बच्चों की नाकारात्मक मनोवृत्ति में परिवर्तन करने की जरूरत है।

iv. विकलांग बच्चों के एकीकरण में माता-पिता तथा समुदाय का पूर्ण रूप से भागीदारी जरूरी है, जो ज्यादातर नहीं होता है।
v. एकीकृत विद्यालयों में ज्ञानेन्द्रीय प्रोत्साहन एवं जीवन कौशल प्रशिक्षण होना चाहिए।
vi. संसाधन कक्षों की स्थापना तथा व्यवहार प्रबंधन के लिए विशेषज्ञों को भी एकीकृत विद्यालयों में होना चाहिए।
vii. बुनियादी ढ़ाचा तथा अनुदेशात्मक सामग्री भी एकीकृत विद्यालयों में होनी चाहिए।

उपर्युक्त मुद्दों का अध्ययन करने के बाद हम संक्षेप में कह सकते हैं कि विकलांग बच्चों के एकीकरण में बहुत सारी बाधाएं हैं, सरकार भी बहुत सी योजनाएं एवं अधिनियम इन बच्चों के एकीकरण के लिए बना चुकी है, परन्तु इसको लागू करना तथा इन बच्चों का एकीकरण व समावेशन करना हम अध्यापकों का काम है। एक अध्यापक की इच्छाशक्ति हो तो इन बच्चों का सही ढंग से एकीकरण हो सकता है।

समावेशन शिक्षा की अवधारणा (Concept of insclusive education)

शिक्षा में समावेशन की अवधारणा की शुरुवात इस आधार पर हुआ कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मूल अधिकार है और प्रत्येक बच्चे की अलग विशेषताएं, रुचि, योग्यता और आवश्यकता होती है जिसका हमें सम्मान करना चाहिए। शिक्षा में समावेशन को हम सामान्य भाषा में समावेशित शिक्षा कहते हैं। चलिए हम देखते हैं कि समावेशित शिक्षा का प्रारम्भ कैसे हुआ था तथा इसका अर्थ क्या है?

समावेशित शिक्षा का प्रारम्भ

समावेशी शब्द का प्रचलन 1990 के दशक के मध्य से बढ़ा, जब जून, 1994 में सलमानका (स्पेन) में यूनेस्को द्वारा ''विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष विश्व सम्मेलनः सुलभता और समता'' का आयोजन हुआ।

इस सम्मेलन में 92 देशों और 25 अंतराष्ट्रीय संगठनों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन का समापन इस उद्घोषणा के साथ हुआ कि ''प्रत्येक बच्चे की चरित्रगत विशिष्टताएँ, रूचियाँ, योग्यता एवं सीखने की आवश्यकताएँ अनोखी होती हैं, अतः शिक्षा प्रणाली में इन विशिष्टताओं और आवश्यकताओं की व्यापक विविधता का ध्यान रखना चाहिए''।

इस सम्मेलन के बाद ही विभिन्न देशों ने बच्चों की आवश्यकताओं, रूचियों एवं योग्यताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाया, शिक्षा मे यही परिवर्तन समावेशित शिक्षा के रूप में प्रचलित हुआ।

समावेशित शिक्षा का अर्थ

सलमानका सम्मेलन (1994) के अनुसार समावेशित शिक्षा से तात्पर्य है:-

''..... बच्चों के उनके शारीरिक, बुद्धिमता, सामाजिक, भावनात्मकता, भाषायी या कोई अन्य परिस्थितियों पर ध्यान दिये बिना विद्यालय को सभी बच्चों को दाखिला देना चाहिए। यह सम्मिलित करता है

विकलांग और प्रतिभावान बच्चे, गली के और कार्य करने वाले बच्चे, गाँव या बंजारे से बच्चे, भाषीय प्रजातीय या सांस्कृतिक अल्पसंख्यक से बच्चे तथा दूसरे अलाभांवित या अधिकारहीन क्षेत्र या समूह से बच्चे।'' **(सलमानका कथन, 1994, पैराग्राफ 3)**

मानव विकास संसाधन मंत्रालय के समावेशित शिक्षा स्कीम (2003) के अनुसार, ''समावेशित शिक्षा से तात्पर्य सभी सीखने वाले, बिना विकलांग एवं विकलांग नवयुवक पूर्व-विद्यालय प्रावधानों, विद्यालय और सामुदायिक शैक्षिक स्थानों पर उपयुक्त तंत्र एवं सहायक सुविधाओं के साथ एक साथ सीख (पढ़) सकें।''

एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि समावेशित शिक्षा से तात्पर्य केवल विकलांग बच्चों को ही कक्षा में सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा देना ही नहीं है, बल्कि सभी बच्चे जो विभिन्न वर्ग एवं योग्यता के हैं को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षा देना समावेशित शिक्षा कहलाता है।